

UP Board Class 12 Hindi 301 (DF) Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hour 15 Minutes | Maximum Marks :100 | Total Questions :12

सामान्य निर्देश

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।
2. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं। दोनों खंडों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

1 (खंड क)

1.(क) 'नासिकेतोपाख्यान' के रचनाकार हैं :

- (i) मुंशी इंशा अल्ला खाँ
- (ii) लल्लू लाल
- (iii) सदल मिश्र
- (iv) मुंशी सदासुख लाल

Correct Answer : (ii) लल्लू लाल

उत्तर : 'नासिकेतोपाख्यान' के रचनाकार लल्लू लाल हैं। यह रचना हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध उपाख्यानों में से एक है, जिसमें नासिकेत की कहानी प्रस्तुत की गई है।

Quick Tip

'नासिकेतोपाख्यान' का कथानक और रचनाकार हिंदी साहित्य के विशेष अध्याय का हिस्सा हैं।

1.(ख) बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित पत्रिका है :

- (i) 'कवि वचन सुधा'
- (ii) 'हिन्दी प्रदीप'
- (iii) 'विशाल भारत'
- (iv) 'साहित्य-सन्देश'

Correct Answer : (ii) 'हिन्दी प्रदीप'

उत्तर : बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित पत्रिका 'हिन्दी प्रदीप' है। यह पत्रिका हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान करती है और हिंदी के लेखकों के लिए एक मंच प्रदान करती है।

Quick Tip

बालकृष्ण भट्ट का योगदान हिंदी साहित्य में बहुत महत्वपूर्ण रहा है, विशेष रूप से पत्रिका सम्पादन के क्षेत्र में।

1.(ग) 'गोदान' किस विधा की रचना है ?

- (i) कहानी
- (ii) उपन्यास
- (iii) निबन्ध
- (iv) नाटक

Correct Answer : (ii) उपन्यास

उत्तर : 'गोदान' एक उपन्यास है, जिसे प्रेमचंद द्वारा रचित किया गया है। यह हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जो ग्रामीण जीवन और सामाजिक समस्याओं को चित्रित करता है।

Quick Tip

'गोदान' को भारतीय साहित्य के 'महान उपन्यासों' में गिना जाता है, जो भारतीय समाज की जटिलताओं को दर्शाता है।

1.(घ) छायावादी युग के प्रसिद्ध आलोचक हैं :

- (i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- (ii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- (iii) धर्मवीर भारती
- (iv) महावीरप्रसाद द्विवेदी

Correct Answer : (ii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

उत्तर : छायावादी युग के प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल थे। उन्होंने हिंदी साहित्य में आलोचना के नए दृष्टिकोण प्रस्तुत किए और इस युग के काव्यशास्त्र को स्थापित किया।

Quick Tip

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावादी काव्यधारा की गहरी समीक्षा की और उसे साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्व दिया।

1.(ङ) 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं :

- (i) मुंशी प्रेमचन्द
- (ii) सदल मिश्र
- (iii) इंशा अल्ला खाँ

(iv) मुंशी सदासुख लाल

Correct Answer : (ii) सदल मिश्र

उत्तर : 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक सदल मिश्र हैं। यह रचना हिंदी साहित्य में एक प्रसिद्ध उपन्यास है, जिसमें संवेदनाओं और मानव संबंधों की गहरी चित्रण की गई है।

Quick Tip

'रानी केतकी की कहानी' का संदर्भ भारतीय सामाजिक जीवन में नारी के स्थान और संघर्ष को दर्शाता है।

2.(क) 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' के रचनाकार हैं :

- (i) 'मुक्तिबोध'
- (ii) 'अज्ञेय'
- (iii) भवानीप्रसाद मिश्र
- (iv) गिरिजाकुमार माथुर

Correct Answer : (ii) 'अज्ञेय'

उत्तर : 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' के रचनाकार 'अज्ञेय' हैं। यह रचना हिंदी साहित्य में आधुनिक काव्यधारा का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें बोधवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया है।

Quick Tip

अज्ञेय का काव्य उनके समय के मानसिक संघर्षों और सांस्कृतिक आंदोलनों का गहरा प्रतिबिंब है।

2.(ख) हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है :

- (i) 'रामचरितमानस'
- (ii) 'रामचन्द्रिका'
- (iii) 'पद्मावत'
- (iv) 'पृथ्वीराज रासो'

Correct Answer : (iv) 'पृथ्वीराज रासो'

उत्तर : हिंदी का प्रथम महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' है। इसे चंदबरदाई ने रचा था और यह हिंदी साहित्य का सबसे पुराना महाकाव्य है, जिसमें भारतीय इतिहास और वीरता को चित्रित किया गया है।

Quick Tip

'पृथ्वीराज रासो' में पृथ्वीराज चौहान के जीवन और संघर्षों को विस्तृत रूप से दर्शाया गया है।

2.(ग) 'छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है' - यह कथन है :

- (i) सुमित्रानंदन पंत का
- (ii) डॉ० नगेन्द्र का
- (iii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का
- (iv) जयशंकर प्रसाद का

Correct Answer : (ii) डॉ० नगेन्द्र का

उत्तर : 'छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है' यह कथन डॉ० नगेन्द्र का है । डॉ० नगेन्द्र ने छायावाद के गहरे अर्थ को समझाते हुए इसे भारतीय काव्यधारा में सूक्ष्म और गूढ़ भावनाओं के विद्रोह के रूप में देखा ।

Quick Tip

डॉ० नगेन्द्र ने छायावाद को न केवल एक काव्यधारा के रूप में, बल्कि भारतीय समाज और साहित्य में निहित गहरे भावनात्मक प्रतिवाद के रूप में व्याख्यायित किया ।

2.(घ) 'कवीर वाणी के डिक्टेटर हैं' - कथन है :

- (i) जयशंकर प्रसाद का
- (ii) रामचन्द्र शुक्ल का
- (iii) नन्द दुलारे वाजपेयी का
- (iv) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का

Correct Answer : (iii) नन्द दुलारे वाजपेयी का

उत्तर : 'कवीर वाणी के डिक्टेटर हैं' यह कथन नन्द दुलारे वाजपेयी का है । वाजपेयी ने कविता की शक्ति और कवि की वाणी की भूमिका को समाज और संस्कृति में महत्वपूर्ण बताया है ।

Quick Tip

नन्द दुलारे वाजपेयी ने कविता को जीवन के सत्य को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम माना, जिसमें कवि अपनी वाणी के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन करता है ।

2.(ङ) सुमित्रानंदन पंत की 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त काव्यकृति है :

- (i) 'वीणा'
- (ii) 'कला और बूढ़ा चाँद'
- (iii) 'ग्रन्थि'
- (iv) 'चिदम्बरा'

Correct Answer : (i) 'वीणा'

उत्तर : सुमित्रानंदन पंत की 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त काव्यकृति 'वीणा' है । यह काव्यकृति हिंदी साहित्य में पंत जी के काव्यशास्त्र का महत्वपूर्ण हिस्सा मानी जाती है ।

Quick Tip

'वीणा' में सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति, सौंदर्य और प्रेम के विषयों पर अपनी गहरी संवेदनाओं को व्यक्त किया ।

3. निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : हमारी युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के मेरे फैसले का आधार भी यही रहा है । उनके सपनों को जानना और उन्हें बताना कि अच्छे, भरे-पूरे और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखना तथा फिर स्वर्णिम युग के लिए काम करना सही है । आज जो कुछ भी करें वह आपके हृदय से किया गया हो, अपनी आत्मा को अभिव्यक्ति दें और इस तरह आप अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कर सकेंगे ।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ तथा उसके लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश 'युवा शक्ति' पाठ से लिया गया है, जिसके लेखक अटल बिहारी वाजपेयी हैं । इस गद्यांश में लेखक ने युवा शक्ति से संपर्क बनाने के महत्व को बताया है और उनके सपनों को समझने की बात की है ।

Quick Tip

किसी गद्यांश में लेखक का नाम हमेशा गद्यांश की मूल भावना और विषय से मिलाकर याद करें ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश में लेखक ने यह बताया है कि यदि हम अपने कार्यों को हृदय से करें और अपनी आत्मा की अभिव्यक्ति करें तो हम अपने आस-पास के वातावरण में प्यार और खुशियों का प्रसार कर सकते हैं । यह विचार इस बात पर जोर देता है कि हमारे कार्यों में शुद्धता और ईमानदारी होनी चाहिए, ताकि हम सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार कर सकें ।

Quick Tip

किसी भी अंश की व्याख्या करते समय उसके भावार्थ को समझना महत्वपूर्ण होता है ।

(iii) लेखक का युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के फैसले का आधार क्या रहा है ?

उत्तर : लेखक का यह मानना है कि युवा शक्ति से संपर्क कायम करने का आधार उनके सपनों को जानना और उन्हें यह बताना है कि एक अच्छा, भरा-पूरा और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन जीने के लिए स्वर्णिम युग की ओर काम करना आवश्यक है । लेखक चाहते हैं कि युवा अपने लक्ष्यों को समझें और उन्हें पूरा करने के लिए मेहनत करें ।

Quick Tip

युवा शक्ति के बारे में सोचते समय, उनके सपनों और आकांक्षाओं को समझने की कोशिश करें।

(iv) हम अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कब कर सकेंगे ?

उत्तर : हम अपने आस-पास प्यार और खुशियों का प्रसार तब कर सकेंगे जब हम अपने कार्यों को दिल से करेंगे और अपनी आत्मा की अभिव्यक्ति करेंगे। लेखक का यह विचार है कि अगर हम अपने कार्यों में ईमानदारी और सच्चाई से काम करेंगे, तो यह आत्मा की शक्ति से हमारे आस-पास का माहौल सकारात्मक बनेगा और प्यार तथा खुशियाँ फैलेंगी।

Quick Tip

सकारात्मक ऊर्जा फैलाने के लिए हमारी सोच और कार्यों में शुद्धता जरूरी है।

(v) 'अभिव्यक्ति' तथा 'प्रसार' का अर्थ लिखिए।

उत्तर : अभिव्यक्ति का अर्थ है किसी विचार, भावना या दृष्टिकोण को व्यक्त करना या प्रकट करना। प्रसार का अर्थ है किसी चीज़ का फैलना या विस्तारित होना, विशेष रूप से ज्ञान, विचार या प्यार का फैलाव।

Quick Tip

अभिव्यक्ति और प्रसार दोनों का उद्देश्य दूसरों तक विचारों और भावनाओं को पहुँचाना होता है।

अथवा

इच्छाएँ नाना हैं और नाना विधि हैं और वे उसे प्रवृत्त रखती हैं। प्रवृत्ति से वह रह-रहकर थक जाता है और निवृत्ति चाहता है। यह प्रवृत्ति और निवृत्ति का चक्र उसको द्वन्द्व से थका मारता है। इस संसार को अभी राग-भाव से वह चाहता है कि अगले क्षण उतने ही भाव-विराग से वह उसका बिनाश चाहता है। पर राग-द्वेष की वासनाओं से अंत में झुंझलाहट और छूटपटाहट ही उसे आती है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ तथा उसके लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश 'कठिनाई की अनुभूति' पाठ से लिया गया है, जिसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं। यह पाठ मानव जीवन के द्वन्द्व और मानसिक संघर्ष को दर्शाता है।

Quick Tip

गद्यांश के लेखक और उनके विचार को समझने के लिए उनके साहित्यिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखें ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश में लेखक ने मनुष्य के मानसिक द्वन्द्व को व्यक्त किया है । व्यक्ति अपनी इच्छाओं में नाना प्रकार की धारा में बहता है, जो उसे प्रवृत्त करती हैं । यह प्रवृत्ति उसे जीवन के प्रति सक्रिय रखती है, लेकिन इसी प्रवृत्ति के चलते वह थक जाता है । फिर वह निवृत्ति की कामना करता है । इस चक्र में वह लगातार राग और द्वेष के बीच उलझा रहता है, जिससे उसकी स्थिति में मानसिक झंझट और छटपटाहट उत्पन्न होती है ।

Quick Tip

व्याख्या करते समय, किसी मानसिक संघर्ष या द्वन्द्व को समझने के लिए व्यक्ति की आंतरिक स्थिति पर ध्यान देना चाहिए ।

(iii) प्रवृत्ति-निवृत्ति के चक्र में फँसा मनुष्य क्यों थक जाता है ?

उत्तर : प्रवृत्ति-निवृत्ति के चक्र में फँसा मनुष्य इसलिए थक जाता है क्योंकि वह लगातार अपने राग और द्वेष के कारण इच्छाओं की पूर्ति में व्यस्त रहता है । यह चक्र उसे मानसिक रूप से उर्जा खर्च करने के अलावा संतुष्टि नहीं दे पाता, जिससे वह निरंतर थकान और तनाव महसूस करता है ।

Quick Tip

हमेशा मानसिक और शारीरिक शांति की आवश्यकता होती है, ताकि प्रवृत्ति के चक्र में उलझने के बजाय हम संतुलित जीवन जी सकें ।

(iv) प्रेम और ईर्ष्या की वासनाओं में पड़कर मनुष्य की स्थिति कैसी हो जाती है ?

उत्तर : प्रेम और ईर्ष्या की वासनाओं में पड़कर मनुष्य की स्थिति अस्थिर हो जाती है । प्रेम उसे एक सकारात्मक उर्जा प्रदान करता है, लेकिन ईर्ष्या उसे अंदर से खाता है और मानसिक अशांति का कारण बनती है । यह दोनों वासनाएँ मिलकर उसे मानसिक संघर्ष, झंझट और छटपटाहट में डाल देती हैं ।

Quick Tip

प्रेम और ईर्ष्या दोनों ही भावनाएँ व्यक्ति के जीवन में गहरे प्रभाव डालती हैं, इसलिए हमें इन्हें संतुलित और समझदारी से संभालना चाहिए।

(v) कौन-सा द्वन्द्व व्यक्ति को थका देता है ?

उत्तर : राग और द्वेष के द्वन्द्व से मनुष्य थक जाता है। जब वह अपनी इच्छाओं और संवेदनाओं के कारण दोनों पक्षों में उलझता है—प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर और प्रेम से ईर्ष्या की ओर—तब यह द्वन्द्व उसे मानसिक थकान में डाल देता है।

Quick Tip

व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए राग-द्वेष से उबरकर संतुलित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

4. निम्नलिखित पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

मुझे फूल मत मारो,
मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो।
होकर मधु के मीत मदन, पट्ट तुम कट्ट, गरल न गारो,
मुझे विकलता, तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो।
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो,
बल हो तो सिन्दुर-बिंदु यह - यह हर नेत्र निहारो !
रूप दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण-धूलि उस रति के सिर पर धारो।

(i) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ का शीर्षक व कवि का नाम लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश 'उर्मिला की प्रार्थना' से लिया गया है, जिसका रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त हैं। यह पद्यांश उर्मिला की मानसिक वेदना और उसकी प्रार्थना को व्यक्त करता है।

Quick Tip

किसी काव्यांश के पाठ और कवि के नाम को पहचानने के लिए उसकी भावनात्मक और साहित्यिक शैली पर ध्यान देना चाहिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: रेखांकित अंश में उर्मिला अपने कष्टों और विषाद के बारे में बात करती है। वह कहती है कि वह एक अबला बाला नहीं है, जिसे लोग निर्दयता से मार सकते हैं। वह उन्हें दया करने की अपील करती है और यह भी कहती है कि मदन (कामदेव) को कटु गरल (विष) से मारा जाए क्योंकि उसे व्यथा और असफलता मिलती है। उर्मिला यह कहकर यह संदेश देती है कि वह कमजोर नहीं है और उसे विकल और पीड़ित करने का कोई अधिकार नहीं रखता।

Quick Tip

व्याख्या करते समय, पात्र के मनोभाव और उसकी स्थिति को समझना जरूरी होता है।

(iii) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने कौन-सा अलंकार प्रयुक्त किया है ?

उत्तर: प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने रूपक अलंकार का प्रयोग किया है। उदाहरण स्वरूप, उर्मिला के सिंदूर-बिंदु को "सिन्दुर-बिंदु यह - यह हर नेत्र निहारो" के रूप में प्रतीकात्मक रूप से पेश किया गया है, जो कि उसके वियोग और मानसिक स्थिति का प्रतीक है।

Quick Tip

रूपक अलंकार तब होता है जब किसी वस्तु या भाव का वास्तविक रूप से मेल खाती हुई दूसरी वस्तु से तुलना की जाती है, जैसे प्रतीकों का प्रयोग।

(iv) काम-व्यथित होने पर उर्मिला किससे प्रार्थना करती है ?

उत्तर: काम-व्यथित होने पर उर्मिला मदन (कामदेव) से प्रार्थना करती है कि वह उसे अपनी जाल से मुक्त कर दे। वह इसे एक अभ्यर्थना के रूप में प्रस्तुत करती है ताकि वह मानसिक शांति प्राप्त कर सके और विकलता से बाहर निकल सके।

Quick Tip

प्रार्थना करते समय, पात्र का मानसिक संघर्ष और उसका उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए।

(v) पद्यांश में उर्मिला ने अपने सिंदूर बिंदु को किसके समान बताया है ?

उत्तर: पद्यांश में उर्मिला ने अपने सिंदूर-बिंदु को "रूप दर्प कंदर्प" के समान बताया है। यह रूपक अलंकार के माध्यम से वह अपने सिंदूर-बिंदु की महत्ता और उसकी स्थिति को व्यक्त करती है, जो उसकी पतिव्रता स्थिति का प्रतीक है।

Quick Tip

कवि जब किसी विशेष वस्तु को किसी अन्य वस्तु के समान प्रस्तुत करता है तो यह रूपक अलंकार कहलाता है ।

अथवा

तरनि-तनूजा तर तमाल तस्वर बहु छाये ।
झुके कूल सों जल परसन हित मनहुँ सुहाये । ।
किध मैं मुकुर लखत उझकि सब निज निज सोभा
कै प्रनवत जल जानि परम पावन फल लोभा ॥
मनु आतप वारन तीर कै सिमिटि सबै छाये रहत ।
के हरि सेवा हित नै रहे निरखि नैन मन सुख लहत । ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के पाठ का शीर्षक व कवि का नाम लिखिए ।

उत्तर : उपर्युक्त पद्यांश 'यमुना तट पर तमाल के वृक्ष' से लिया गया है, जिसका रचनाकार सूरदास हैं । इस पद्यांश में यमुना तट पर तमाल वृक्षों के सुंदर दृश्य का चित्रण किया गया है ।

Quick Tip

काव्यांश के शीर्षक और रचनाकार को पहचानने के लिए उसकी भावनाओं और प्रकृति के बोध को समझना आवश्यक है ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश में कवि ने यमुना तट पर झुके हुए तमाल वृक्षों और उनके जल में प्रतिबिंबित रूप का वर्णन किया है । यह जल रूपी दर्पण में वृक्षों की सुंदरता को दर्शाता है । कवि यह बताते हैं कि यह दृश्य मन को बहुत सुखद और पवित्र लगता है । जल में दिखाई देती उनकी छाया में एक आकर्षण है, और उस जल का स्पर्श भी सुखद होता है ।

Quick Tip

कविता के रेखांकित अंश की व्याख्या में कविता के प्रतीकात्मक अर्थ को समझने की कोशिश करें ।

(iii) इस पद में किसका मनोहारी चित्रण किया गया है ?

उत्तर : इस पद में यमुना तट पर स्थित तमाल वृक्षों और उनके जल में प्रतिबिंब का मनोहारी चित्रण किया गया है। वृक्षों की हरी-भरी छांव और जल में उनकी छाया कवि के लिए अत्यधिक आकर्षक और सुखद प्रतीत हो रही है।

Quick Tip

कवि ने अपने शब्दों के माध्यम से प्रकृति के सुंदर और मनमोहक दृश्य का चित्रण किया है।

(iv) यमुना तट पर तमाल के झुके हुए वृक्ष किस प्रकार के प्रतीत हो रहे हैं ?

उत्तर : यमुना तट पर झुके हुए तमाल के वृक्ष प्रतीत हो रहे हैं जैसे वे जल पर अपनी छाया डालकर विश्राम कर रहे हों। ये वृक्ष नर्म और कोमल लगे हैं, और जल के साथ उनका सामंजस्य भी एक शांतिपूर्ण और आकर्षक दृश्य प्रस्तुत कर रहा है।

Quick Tip

प्राकृतिक दृश्य का चित्रण करते समय वृक्षों की स्थिति और उनके पर्यावरण के साथ मेलजोल का ध्यान रखें।

(v) जल रूपी दर्पण में अपनी शोभा कौन देख रहा है ?

उत्तर : जल रूपी दर्पण में तमाल वृक्ष अपनी शोभा देख रहे हैं। उनका रूप जल में प्रतिबिंबित हो रहा है, और यह दृश्य कवि के अनुसार बहुत सुंदर और आकर्षक है।

Quick Tip

जल में प्रतिबिंबित होने वाले दृश्य को ध्यान से देखना जरूरी है, क्योंकि यह प्राकृतिक सुंदरता और रूप की प्रतीकात्मकता को दर्शाता है।

5.(क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए :
(अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

(i) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

उत्तर : डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म 1907 में उत्तर प्रदेश के काशी में हुआ था। वे हिंदी साहित्य के एक महान आलोचक, विचारक और इतिहासकार थे। हिंदी साहित्य को उन्होंने आलोचना, निबंध और साहित्यिक काव्यशास्त्र के माध्यम से समृद्ध किया। उनकी विचारधारा में भारतीय संस्कृति और साहित्य के महत्व को विशेष रूप से स्थान दिया गया।

उनकी प्रमुख रचनाएँ 'हिंदी साहित्य का इतिहास', 'काव्यशास्त्र की समस्या', 'निराला : एक समीक्षा', 'द्विवेदी युग की काव्यधारा', 'रचनाशीलता की प्रक्रिया' आदि हैं। इन रचनाओं में उन्होंने हिंदी सा-

हित्य की काव्यधारा, आलोचना और साहित्यिक परंपराओं को परिभाषित किया। वे न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण थे, बल्कि उनके विचार आज भी हिंदी साहित्य के छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक हैं।

Quick Tip

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचनाएँ साहित्यिक दृष्टि से गहरी और प्रभावशाली होती हैं। उनके आलोचनात्मक दृष्टिकोण ने हिंदी साहित्य को एक नया दृष्टिकोण दिया।

(ii) **वासुदेवशरण अग्रवाल उत्तर:** वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म 1914 में उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में हुआ था। वे हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध निबंधकार, कवि और आलोचक थे। उनका साहित्य भारतीय समाज, राजनीति और संस्कृति से गहरे रूप से जुड़ा हुआ था। उन्होंने हिंदी साहित्य के विभिन्न रूपों में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

उनकी प्रमुख रचनाएँ 'नैतिकता की समस्या', 'समाजवाद और साहित्य', 'कविता और अन्य लेख', 'साहित्यिक निबंध' आदि हैं। वे समाज में व्याप्त अन्याय और शोषण के खिलाफ थे और अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने समाज के सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए। उनके निबंध साहित्य के शास्त्रीय रूप और जीवन के विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं।

Quick Tip

वासुदेवशरण अग्रवाल के साहित्य में समाज की स्थिति और सांस्कृतिक मूल्यों की गहरी पड़ताल मिलती है, जो आज भी प्रासंगिक है।

(iii) **पं० दीनदयाल उपाध्याय उत्तर:** पं० दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 1916 में उत्तर प्रदेश के जवाहरनगर में हुआ था। वे भारतीय राजनीति के महान विचारक, समाजसुधारक और लेखक थे। उनका जीवन भारतीय संस्कृति और राष्ट्रियता के प्रति गहरी निष्ठा का प्रतीक था। उन्होंने भारतीय समाज के निर्माण और विकास में अपनी अमूल्य भूमिका निभाई। उनका सिद्धांत "एकात्म मानववाद" भारतीय समाज की विविधता में एकता को स्थापित करने का मार्गदर्शन प्रदान करता है।

उपाध्याय जी ने भारतीय समाज की जड़ों में निहित सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित एक नीति का निर्माण किया। उनका मानना था कि भारतीय राजनीति और समाज को पश्चिमी विचारधाराओं से मुक्त करके भारतीय दृष्टिकोण से ही सही दिशा में आगे बढ़ाया जा सकता है। उनका जीवन दर्शन, संस्कृति, और समाज की वास्तविकता को समझने का प्रयास था। उन्होंने भारतीय समाज को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ग्राम विकास, स्वदेशी उद्योग, और राष्ट्रवाद पर बल दिया।

उनकी प्रमुख रचनाएँ 'इक्कीसवीं सदी का भारतीय मार्ग', 'पद्मराग', 'राष्ट्रोत्थान और राष्ट्र निर्माण', 'राष्ट्रधर्म', 'समाजवाद और एकात्म मानववाद' आदि हैं। इन रचनाओं में उन्होंने भारतीय समाज के हर पहलू पर विचार किया और समाजवाद के भारतीय रूप का विकास किया। उनका विचार था कि समाजवाद को भारतीय संदर्भ में ढालने की आवश्यकता है, और यह केवल भारतीय संस्कृति और मूल्यों से ही संभव है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को सर्वोपरि रखते हुए उसे आधुनिकता से जोड़ने की दिशा में कार्य किया। उनके विचार भारतीय समाज और संस्कृति को प्रगति के रास्ते पर ले जाने के लिए प्रेरणादायक रहे हैं। वे चाहते थे कि भारतीय समाज अपने आत्ममूल्यों को न भूलकर अपनी सांस्कृतिक जड़ों के साथ

आधुनिक विकास की दिशा में आगे बढ़े। उनके विचार और कृतियाँ आज भी भारतीय राजनीति, समाज और संस्कृति में एक प्रमुख प्रभाव रखते हैं।

अवधारणा : पं० दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय राष्ट्रीयता, संस्कृति और समाज को एकात्म मानववाद के माध्यम से सशक्त किया, और उनकी कार्यप्रणाली आज भी एक मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत की जाती है।

Quick Tip

पं० दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में भारतीय संस्कृति, समाजवाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने पर जोर था, जो आज भी समाज में प्रासंगिक हैं।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक विशेषताओं को लिखिए : (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

(i) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

उत्तर : सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के जनपद प्रयागराज में हुआ था। वे हिंदी के प्रसिद्ध कवि, लेखक और पत्रकार थे। 'अज्ञेय' जी का लेखन बौद्धिकता, अनुभूति और अनुभव पर आधारित था। उन्होंने आधुनिक कविता में नई लहर का सूत्रपात किया। उनके लेखन में समाजिक और मानसिक पहलुओं की गहरी छानबीन की गई है। उनकी प्रमुख रचनाएँ 'शेष प्रश्न', 'नया गीत', 'कविता के नए क्षितिज', 'विस्मयकारी यात्रा' हैं। उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है और पाठकों के मन में गहरी छाप छोड़ता है।

'अज्ञेय' जी ने कविता के रूप में मौलिकता को नया आयाम दिया। उनकी कविताओं में जीवन की जटिलताओं और व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं की सूक्ष्मता से विवेचना की जाती थी। उनका साहित्य न केवल गहरी बौद्धिकता का प्रतीक है, बल्कि इसमें एक नई संवेदनशीलता और आत्मबोध भी निहित है। 'अज्ञेय' ने छायावादी कविता को एक नए मोड़ पर रखा, जहाँ आत्मा की गहरी अनुभूतियाँ और अस्तित्ववादी चिंतन प्रमुख थे। उन्होंने निरंतर आधुनिकता और परिवर्तन के विचारों को समाज और साहित्य में समाहित किया।

Quick Tip

'अज्ञेय' जी की कविताओं में व्यक्ति की मनोवृत्तियों, समाजिक संघर्षों और आधुनिक जीवन के उतार-चढ़ाव का प्रभावी चित्रण किया गया है।

(ii) रामधारी सिंह 'दिनकर'

उत्तर : रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के सहरसा जिले में हुआ था। वे हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, निबंधकार और विचारक थे। उनका लेखन भारतीय राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता संग्राम और समाज के जागरण से गहरे रूप से जुड़ा हुआ था। उनकी कविताओं में वीरता, आत्मविश्वास और संघर्ष की भावना का समावेश था।

'दिनकर' जी की प्रमुख रचनाएँ 'रश्मि रथी', 'कुरुक्षेत्र', 'हिमालय' और 'संघर्षों के गीत' हैं। उन्होंने महाकाव्यात्मक और ऐतिहासिक विषयों को कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिससे उनकी कविताएँ जनमानस में गहरी पैठ बना सकीं। 'रश्मि रथी' उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना मानी जाती है, जिसमें

महाभारत के कर्ण के चरित्र को केंद्रित किया गया है ।

उनकी कविताओं में समाज की जिजीविषा, न्याय और समानता की अपील, और मानवता के उच्चतम आदर्शों की बात की गई है । उनके विचार और कविताएँ आज भी प्रेरणा का स्रोत मानी जाती हैं । उन्होंने भारतीय संस्कृति और इतिहास के महान व्यक्तित्वों को उजागर किया और स्वतंत्रता संग्राम के महत्व को रचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया ।

'दिनकर' जी के साहित्य में राष्ट्रीयता का जागरण और साहित्य के माध्यम से समाज सुधार की गहरी समझ थी । उन्होंने कविता को मात्र काव्यात्मकता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज और राष्ट्र के विकास का एक औजार माना ।

Quick Tip

'दिनकर' जी की रचनाओं में भारतीयता, वीरता और आत्मविश्वास के दर्शन होते हैं, जो उन्हें न केवल एक कवि, बल्कि एक विचारक भी बनाते हैं ।

(iii) जयशंकर प्रसाद

उत्तर : जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी 1889 को वाराणसी में हुआ था । वे हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि, नाटककार और उपन्यासकार थे । उनका लेखन विशेष रूप से प्रेम, सौंदर्य और भारतीय संस्कृति के प्रति गहरी श्रद्धा से भरा हुआ था । वे छायावाद आंदोलन के प्रमुख कवि थे, जिन्होंने कविता और साहित्य को एक नई दिशा दी ।

प्रसाद जी की प्रमुख रचनाएँ 'कामायनी', 'कंकाल', 'अधूरी कहानी', 'चित्रलेखा', 'विभावरी' हैं । उनका सबसे प्रसिद्ध कार्य 'कामायनी' एक महाकाव्य है, जो मानवता, दार्शनिक चिंतन और ब्रह्म के विचारों को प्रस्तुत करता है । उनकी कविता में प्रकृति, प्रेम, जीवन की जटिलताओं और आत्मिक अनुभवों का गहरा चित्रण मिलता है ।

जयशंकर प्रसाद का साहित्य भारतीय जीवन के सूक्ष्म रूपों को उजागर करता है, और उनकी कविताएँ साहित्य की गहराई और सूक्ष्मता को बयाँ करती हैं । उन्होंने भारतीय साहित्य में प्रेम और भक्ति के आदर्शों को महत्वपूर्ण स्थान दिया और जीवन के हर पहलू की सुंदरता को पहचानने का प्रयास किया । उनकी रचनाओं में समकालीन समाज की समस्याओं और सांस्कृतिक चिंताओं का गहरा संकेत मिलता है । उनका साहित्य न केवल उनकी काव्यात्मकता का प्रमाण है, बल्कि वे एक संवेदनशील और गहरे चिंतनशील लेखक भी थे ।

Quick Tip

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में प्रेम और आत्मिक अनुभव की गहराई, साथ ही भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी श्रद्धा स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है ।

6. 'कर्मनाशा की हार' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए ।)

उत्तर : 'कर्मनाशा की हार' कहानी का प्रमुख पात्र समाज में व्याप्त अंधविश्वास और रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष करता है । वह कर्म के महत्व को समझता है और अपने आत्मबल के माध्यम से भाग्यवादी सोच को चुनौती देता है । उसकी जिजीविषा, संकल्प और साहसिक प्रवृत्ति उसे एक प्रेरणादायक पात्र बनाते हैं ।

यह पात्र दर्शाता है कि भाग्य केवल कर्म पर आधारित होता है, न कि किसी बाहरी शक्ति पर। वह अपनी परिस्थितियों से हार नहीं मानता, बल्कि आत्मविश्वास और कठिन परिश्रम से अपने जीवन को सफल बनाता है। इस पात्र के माध्यम से लेखक यह संदेश देते हैं कि सच्चे आत्मविश्वास और संकल्प से कोई भी बाधा पार की जा सकती है।

Quick Tip

'कर्मनाशा की हार' का पात्र हमें यह सिखाता है कि किस्मत से अधिक महत्वपूर्ण हमारे कर्म होते हैं, जो जीवन की दिशा तय करते हैं।

अथवा

'बहादुर' अथवा 'खून का रिश्ता' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: 'बहादुर' कहानी का उद्देश्य यह दर्शाना है कि सच्चा बहादुर वही होता है जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने नैतिक मूल्यों को बनाए रखता है। यह कहानी साहस, ईमानदारी और सच्चाई के महत्व को उजागर करती है। इसमें बताया गया है कि बाहरी बल या हिंसा बहादुरी नहीं है, बल्कि कठिन परिस्थितियों में अपने सिद्धांतों पर अडिग रहना ही असली वीरता है।

'खून का रिश्ता' कहानी मानवीय संबंधों की गहराई और बलिदान की भावना को दर्शाती है। यह कहानी बताती है कि सच्चे रिश्ते केवल रक्त से नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास और आत्मीयता से बनते हैं। लेखक इस कहानी के माध्यम से त्याग, समर्पण और मानवीय मूल्यों की महत्ता को दर्शाते हैं।

Quick Tip

'बहादुर' कहानी सच्ची वीरता और ईमानदारी को दर्शाती है, जबकि 'खून का रिश्ता' आत्मीय संबंधों की सच्ची परिभाषा को प्रकट करता है।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्डकाव्य के एक प्रश्न का उत्तर लिखिए: (अधिकतम शब्द - सीमा 80 शब्द)

(क). 'रश्मि रथी' खण्डकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर: 'रश्मि रथी' खण्डकाव्य में श्रीकृष्ण को धर्म, नीति और कूटनीति के अद्वितीय ज्ञाता के रूप में चित्रित किया गया है। वे महाभारत युद्ध में न्याय और सत्य के पक्षधर हैं और अधर्म के विनाश हेतु समर्पित रहते हैं।

- नीति और धर्म के संरक्षक: श्रीकृष्ण धर्म और न्याय की स्थापना के लिए सदैव कार्यरत रहते हैं।
- कर्ण के प्रति सहानुभूति: वे कर्ण को उसकी वास्तविक पहचान बताते हैं और उसे पांडवों का साथ देने के लिए प्रेरित करते हैं।
- कूटनीति और रणनीति: श्रीकृष्ण महाभारत युद्ध में पांडवों को विजय दिलाने के लिए रणनीतियाँ बनाते हैं, जिससे युद्ध का परिणाम न्याय के पक्ष में आता है।

श्रीकृष्ण का चरित्र इस खंडकाव्य में धर्म, करुणा और राजनीति का संगम दर्शाता है। वे केवल एक योद्धा ही नहीं, बल्कि नीति और विवेक के प्रतीक भी हैं।

Quick Tip

श्रीकृष्ण का चरित्र धर्म और न्याय की रक्षा के लिए समर्पित है। 'रश्मिर्थी' में वे एक नायक के रूप में नीति, कूटनीति और करुणा का अद्भुत संतुलन दर्शाते हैं।

अथवा

'रश्मिर्थी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 'रश्मिर्थी' रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक महाकाव्य है, जिसमें महाभारत के नायक कर्ण के जीवन का विस्तृत चित्रण किया गया है। इस खंडकाव्य की कुछ प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित हैं :

- **कर्ण का जन्म और संघर्ष** : कर्ण कुंती पुत्र होते हुए भी समाज में सूतपुत्र कहलाकर अपमानित हुआ और जीवनभर संघर्ष करता रहा।
- **दुर्योधन की मित्रता** : दुर्योधन ने कर्ण को अंगदेश का राजा बनाया, जिसके कारण कर्ण सदैव कौरवों के प्रति निष्ठावान रहा।
- **कर्ण की दानवीरता** : इंद्र के अनुरोध पर कर्ण ने अपने कवच-कुंडल दान कर दिए, जिससे वह महाभारत युद्ध में दुर्बल हो गया।
- **महाभारत युद्ध और कर्ण का बलिदान** : अर्जुन से युद्ध करते समय कर्ण के रथ का पहिया धंस गया, और इसी स्थिति में उसने वीरगति प्राप्त की।

यह खंडकाव्य कर्ण के संघर्ष, निष्ठा और वीरता की प्रेरणादायक कथा प्रस्तुत करता है।

Quick Tip

'रश्मिर्थी' में कर्ण की दानशीलता, संघर्ष और बलिदान को विशेष रूप से उजागर किया गया है, जो इसे महाभारत का सबसे प्रेरणादायक खंडकाव्य बनाता है।

(ख). 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के आधार पर दशरथ का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर : 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य में राजा दशरथ का चरित्र करुणा, पश्चाताप और धर्मपरायणता का प्रतीक है। वे न्यायप्रिय, संवेदनशील और धर्म का पालन करने वाले राजा हैं।

- **दशरथ की वीरता** : वे अयोध्या के एक शक्तिशाली और न्यायप्रिय राजा थे, जो अपने पराक्रम के लिए प्रसिद्ध थे।

- अनजाने में हुई भूल : उन्होंने बालक श्रवण कुमार को भ्रमवश मृग समझकर बाण मारा, जिससे वह मृत्यु को प्राप्त हुआ ।
- पश्चाताप और धर्मपरायणता : जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया, तो उन्होंने अपने भाग्य को स्वीकार किया और अंततः इसी पीड़ा में अपने प्राण त्याग दिए ।

राजा दशरथ का चरित्र हमें सिखाता है कि क्षमा और धर्म की प्रतिष्ठा सर्वोपरि होती है ।

Quick Tip

दशरथ का चरित्र संवेदनशीलता, न्याय और अपने कर्मों के प्रति उत्तरदायित्व को दर्शाता है ।

अथवा

'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए ।

उत्तर : 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य एक महान पुत्र की श्रद्धा और सेवा भाव को दर्शाता है । इसकी कुछ प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित हैं :

- श्रवण कुमार की सेवा भावना : उन्होंने अपने नेत्रहीन माता-पिता को तीर्थ यात्रा पर ले जाने का संकल्प लिया ।
- राजा दशरथ की भूल : दशरथ ने भ्रमवश श्रवण कुमार को तीर मार दिया, जिससे उनकी मृत्यु हो गई ।
- श्रवण कुमार का अंतिम वचन : मृत्यु के समय उन्होंने अपने माता-पिता की सेवा का अनुरोध किया ।
- माता-पिता का श्राप : उन्होंने दशरथ को श्राप दिया कि वे भी अपने पुत्र वियोग में प्राण त्याग देंगे ।

यह खण्डकाव्य त्याग, प्रेम और सेवा भावना की प्रेरणादायक कथा है ।

Quick Tip

श्रवण कुमार का चरित्र आदर्श पुत्र की मिसाल प्रस्तुत करता है, जो कर्तव्य और सेवा भावना का प्रतीक है ।

7.(ग) 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य की विशेषताओं का निरूपण कीजिए ।

उत्तर : 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य एक प्रेरणादायक काव्य रचना है, जो सामाजिक चेतना और आत्मबोध के विचारों को प्रकट करती है । इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

- **दार्शनिकता** : इसमें जीवन के गूढ़ तत्वों और आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यक्ति है ।
- **काव्यगत सौंदर्य** : भाषा और शिल्प की दृष्टि से यह खण्डकाव्य उत्कृष्ट कोटि का है ।
- **मानवीय संवेदनाएँ** : इसमें प्रेम, करुणा और संघर्ष का चित्रण प्रभावशाली ढंग से किया गया है ।
- **समाज सुधार का संदेश** : इसमें नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है ।

'आलोक-वृत्त' समाज में जागरूकता और आत्ममंथन को प्रेरित करने वाला खण्डकाव्य है ।

Quick Tip

यह खण्डकाव्य आत्मबोध, आध्यात्मिकता और समाज सुधार के संदेशों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करता है ।

अथवा

'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य का नायक आत्मबोध, संघर्ष और सामाजिक चेतना का प्रतीक है । वह जीवन की कठिनाइयों का सामना करते हुए सत्य और धर्म की राह पर चलता है ।

- **नायक की आत्मबोध यात्रा** : वह स्वयं की पहचान को समझने और जीवन के गहरे अर्थों को खोजने के लिए संघर्ष करता है ।
- **साहस और दृढ़ निश्चय** : अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए, वह समाज में बदलाव लाने का प्रयास करता है ।
- **सामाजिक जागरूकता** : वह समाज में व्याप्त अन्याय और कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठाता है और न्याय की स्थापना करता है ।
- **नैतिक मूल्यों का प्रतीक** : उसकी करुणा, दयालुता और सत्य के प्रति प्रतिबद्धता उसे एक प्रेरणादायक चरित्र बनाती है ।

यह नायक केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है, जो आत्मबोध और समाज सुधार का संदेश देता है ।

Quick Tip

'आलोक-वृत्त' का नायक आत्मबोध, संघर्ष और सामाजिक सुधार की चेतना का प्रतीक है, जो सत्य और धर्म की राह पर चलता है ।

7. 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर: 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रभक्ति को समर्पित एक प्रेरणादायक काव्य रचना है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- देशभक्ति की भावना : इसमें स्वतंत्रता संग्राम और देशभक्ति के जज्बे का उत्कृष्ट चित्रण किया गया है।
- बलिदान का आदर्श : इसमें स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और बलिदान की प्रेरणादायक कहानियाँ प्रस्तुत की गई हैं।
- काव्यगत सौंदर्य : इसमें ओजस्वी और भावनात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है।
- नैतिकता और प्रेरणा : यह पाठकों में राष्ट्रीयता और सामाजिक जागरूकता की भावना जागृत करता है।

यह खण्डकाव्य स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्ष को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है।

Quick Tip

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य देशभक्ति, संघर्ष और बलिदान की भावना को प्रेरित करने वाला अद्वितीय काव्य है।

अथवा

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाएँ संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर: 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की संघर्षशील गाथा को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। इसकी प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित हैं:

- पराधीनता का चित्रण : इसमें भारत की गुलामी और अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचारों का वर्णन किया गया है।
- स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान : इसमें महात्मा गांधी, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद आदि सेनानियों के संघर्ष और बलिदान को दर्शाया गया है।
- विद्रोह और संघर्ष : 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 तक की क्रांतिकारी गतिविधियों का वर्णन किया गया है।
- बलिदान और शहीदों का सम्मान : इसमें उन वीरों की गाथाएँ शामिल हैं, जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।
- आज़ादी की प्राप्ति : अंत में भारत की स्वतंत्रता को प्राप्त करने की घटना और उसकी ऐतिहासिक महत्ता को प्रदर्शित किया गया है।

यह खण्डकाव्य देशभक्ति, संघर्ष और बलिदान की भावना को प्रेरित करता है ।

Quick Tip

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य स्वतंत्रता संग्राम की गाथा को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है, जो राष्ट्रभक्ति और बलिदान की भावना को जागृत करता है ।

(ड). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर किसी स्त्री पात्र का चरित्रांकन कीजिए ।

उत्तर : 'त्यागपथी' खण्डकाव्य में स्त्री पात्र आत्मबल, धैर्य और त्याग की प्रतिमूर्ति होती है । वह केवल नारीत्व का प्रतीक नहीं, बल्कि कर्तव्यपरायणता और समाज के लिए बलिदान देने की भावना को भी दर्शाती है ।

- धैर्य और सहनशीलता : वह कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखती है और संघर्षों का सामना करती है ।
- त्याग और समर्पण : समाज और परिवार के हित में अपने व्यक्तिगत सुखों का त्याग कर देती है ।
- संघर्षशील प्रवृत्ति : समाज में स्त्री के अधिकारों और कर्तव्यों का बोध कराते हुए वह अपनी शक्ति का परिचय देती है ।
- नैतिक मूल्यों की संरक्षक : उसकी विचारधारा उच्च कोटि की होती है, जिससे समाज को नैतिकता और प्रेरणा प्राप्त होती है ।

इस खण्डकाव्य की स्त्री पात्र केवल परंपरागत नारी का प्रतिनिधित्व नहीं करती, बल्कि समाज में परिवर्तन लाने का कार्य भी करती है ।

Quick Tip

'त्यागपथी' की स्त्री पात्र संघर्ष, आत्मबल और त्याग का प्रतीक है, जो समाज को नई दिशा देने का कार्य करती है ।

अथवा

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के 'चतुर्थ सर्ग' की घटना अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर : 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग में संघर्ष, आत्मबल और त्याग की भावना का चरमोत्कर्ष देखने को मिलता है । यह सर्ग नायक के जीवन में एक निर्णायक मोड़ प्रस्तुत करता है ।

- संघर्ष की गाथा : नायक कठिन परिस्थितियों का सामना करता है और समाज के उत्थान हेतु त्याग का संकल्प लेता है ।

- **आत्मबलिदान की भावना** : वह अपने व्यक्तिगत हितों को छोड़कर समाज के कल्याण के लिए समर्पित हो जाता है ।
- **दृष्टिकोण में परिवर्तन** : इस सर्ग में नायक का दृष्टिकोण और अधिक दृढ़ हो जाता है, जिससे वह जीवन की नई राह पर अग्रसर होता है ।
- **समाज को प्रेरणा** : यह सर्ग पाठकों को प्रेरित करता है कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए त्याग और संघर्ष आवश्यक हैं ।

चतुर्थ सर्ग त्याग, सेवा और निःस्वार्थ कर्तव्य भावना को उजागर करने वाला महत्वपूर्ण भाग है ।

Quick Tip

'त्यागपथी' का चतुर्थ सर्ग संघर्ष, आत्मत्याग और समाज के प्रति समर्पण की भावना को प्रदर्शित करता है ।

(च). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर 'दुःशासन' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में दुःशासन का चरित्र अधर्म, अहंकार और अन्याय का प्रतीक है । वह दुर्योधन का अनुयायी और कौरव पक्ष का एक क्रूर योद्धा है, जो अन्याय और अत्याचार की भावना से प्रेरित रहता है ।

- **अन्यायी और क्रूर** : दुःशासन ने द्रौपदी के चीरहरण का प्रयास किया, जिससे उसकी क्रूरता और अनैतिकता प्रकट होती है ।
- **अहंकारी और अधर्मी** : वह धर्म के विरुद्ध कार्य करता है और अन्याय का समर्थन करता है ।
- **दुर्योधन का अंधभक्त** : दुःशासन दुर्योधन की नीतियों का आँख मूँदकर समर्थन करता है और कौरवों की ओर से हर अधार्मिक कार्य में सहायक बनता है ।
- **अंततः अधर्म का पतन** : महाभारत युद्ध में भीम द्वारा उसका वध अधर्म के नाश और सत्य की विजय का प्रतीक बनता है ।

दुःशासन का चरित्र यह दर्शाता है कि अन्याय और अत्याचार की प्रवृत्ति अंततः विनाश का कारण बनती है ।

Quick Tip

दुःशासन का चरित्र अधर्म और अहंकार का प्रतीक है, जो अंततः सत्य के समक्ष पराजित होता है ।

अथवा

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर: 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य धर्म, न्याय और सत्य की विजय की गाथा को प्रस्तुत करता है । इसमें जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का उत्कृष्ट चित्रण किया गया है ।

- धर्म और सत्य की प्रधानता : यह खण्डकाव्य दर्शाता है कि अंततः सत्य और धर्म की विजय होती है ।
- अधर्म और अहंकार का पतन : इसमें अन्याय, अधर्म और अत्याचार के अंत का उल्लेख किया गया है ।
- चरित्रों का गहन अध्ययन : यह महाभारत के पात्रों के गुणों और अवगुणों का विस्तृत विश्लेषण करता है ।
- काव्य सौंदर्य : इसमें ओजपूर्ण और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग हुआ है, जो पाठकों में प्रेरणा जगाती है ।

यह खण्डकाव्य हमें सिखाता है कि सत्य और धर्म की राह पर चलने से ही विजय प्राप्त होती है ।

Quick Tip

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य सत्य, धर्म और न्याय की विजय का संदेश देता है, जो समाज में नैतिकता और प्रेरणा का संचार करता है ।

2 (खण्ड ख)

8.(क) निम्नलिखित संस्कृत गद्यांश में से किसी एक का सन्दर्भ - सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए । अतीते प्रथमकल्पे जनाः एकमभिरूपं सौभाग्य प्राप्तं सर्वाकारपरिपूर्णं पुरुषं राजानम कुर्वन् । चतुष्पदा अपि सन्निपत्य एकं सिंहं राजानमकुर्वन् । तत्रः शकुनिगणः हिमवत्-प्रदेशे एकस्मिन् पाषाणे सन्निपत्य 'मनुरूपेषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु च । अस्माकं पुनरन्तरे राजा नास्ति । अराजको वासी नाम न वर्तते । एको राजस्थाने स्थापयितव्यः' इति उक्तवन्तः । अथ ते परस्पर- मवलोकयन्तः एकमुलूकं दृष्ट्वा 'अयं नो रोचते' इत्यवोचन् ।

उत्तर :

सन्दर्भ : उपर्युक्त गद्यांश में प्राचीन समय में राजा के महत्व और शासन की आवश्यकता को दर्शाया गया है । इसमें यह बताया गया है कि विभिन्न जातियों ने अपने समाज के लिए एक योग्य राजा का चुनाव किया और पक्षियों ने भी इस पर विचार किया ।

हिन्दी अनुवाद : अतीत में प्रथम कल्प में मनुष्यों ने एक सौम्य, सौभाग्यशाली और सभी गुणों से युक्त पुरुष को अपना राजा बनाया । इसी प्रकार, चारपाए प्राणियों (पशुओं) ने मिलकर एक सिंह को अपना राजा चुना ।

इसके बाद पक्षियों का समुदाय हिमालय प्रदेश के एक शिला पर एकत्र हुआ और उन्होंने परस्पर विचार किया— "मनुष्यों में राजा नियुक्त किया गया, चारपाए प्राणियों ने भी राजा चुन लिया, लेकिन हमारे

बीच कोई राजा नहीं है। अराजक समाज का अस्तित्व नहीं रह सकता। हमें भी किसी एक को राजा बनाना चाहिए।"

इसके पश्चात उन्होंने इधर-उधर देखा और एक उल्लू को देखकर कहा— "यह हमें पसंद आता है। इसे ही अपना राजा बनाएँगे।"

Quick Tip

इस गद्यांश से हमें यह शिक्षा मिलती है कि किसी समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए एक योग्य नेतृत्व आवश्यक होता है।

अथवा

बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिक जीवनस्य अभ्युत्थानाय पर्युक्ता आसन् । परमथ इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्री सहयोग कारणानि, विश्वबन्धुत्वस्य विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति । राष्ट्रनायकस्य श्री जवाहरलाल नेहरू महोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पंचशीलसिद्धान्तानाधिकृत्य एवाभवत् । यतोहि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ । आधुनिके . जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः ।

उत्तर :

सन्दर्भ : यह गद्यांश बौद्ध युग में स्थापित पंचशील सिद्धांतों के महत्व और उनके आधुनिक राजनैतिक स्वरूप पर प्रकाश डालता है। इसमें भारत और चीन के संबंधों में इन सिद्धांतों की भूमिका को भी दर्शाया गया है।

हिन्दी अनुवाद : बौद्ध युग में ये सिद्धांत व्यक्ति के जीवन के उत्थान के लिए पर्युक्त किए जाते थे। किन्तु, इन सिद्धांतों का महत्व केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वे राष्ट्रों के बीच मैत्री और सहयोग के कारक बन गए। ये पंचशील सिद्धांत विश्वबंधुत्व और विश्वशांति के महत्वपूर्ण साधन बन गए।

भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के शासनकाल में भारत और चीन के बीच मित्रता इन्हीं पंचशील सिद्धांतों पर आधारित थी। क्योंकि दोनों राष्ट्र बौद्ध धर्म में गहरी आस्था रखते थे। आधुनिक विश्व में पंचशील सिद्धांतों ने एक नया राजनैतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया है और यह विभिन्न राष्ट्रों के कूटनीतिक संबंधों का आधार बन गए हैं।

Quick Tip

पंचशील सिद्धांत केवल बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक राजनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

8.(ख) निम्नलिखित संस्कृत श्लोकों में से किसी एक का सन्दर्भ - सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

सहसा विदधीत न किरयाम विवेकः परमापदां पदम् ।

वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुरु लुब्धा स्वमेव सम्पदः ।।

उत्तर :

सन्दर्भ : उपर्युक्त श्लोक नीति शास्त्र पर आधारित है, जिसमें विवेकपूर्ण निर्णय लेने की महत्ता को दर्शाया गया है। यह श्लोक बताता है कि कोई भी कार्य करने से पहले उस पर गहराई से विचार करना आवश्यक है।

हिन्दी अनुवाद : बिना सोचे-विचारे जल्दबाजी में कोई कार्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि विवेकहीनता अत्यंत गंभीर संकट का कारण बन सकती है। जो व्यक्ति हर कार्य को सोच-समझकर करता है, उसे महान लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। धन और सफलता भी विवेकपूर्ण निर्णय लेने वाले व्यक्ति को ही प्राप्त होती है, न कि उन लोगों को जो बिना सोचे-समझे निर्णय लेते हैं।

यह श्लोक हमें सिखाता है कि धैर्यपूर्वक विचार करने के बाद ही कोई भी कार्य करना चाहिए, क्योंकि जल्दबाजी में लिया गया निर्णय हानिकारक हो सकता है।

Quick Tip

कोई भी कार्य करने से पहले उस पर गहराई से विचार करना चाहिए, क्योंकि विवेकहीनता संकट का कारण बन सकती है।

अथवा

सुपुस्पितांस्तु पश्यैतान् कर्णिकारान् समन्ततः ।

हारक प्रति सञ्छत्रान् नरान् पीताम्बरानिव । ।

उत्तर :

सन्दर्भ : यह श्लोक प्राकृतिक सौंदर्य के वर्णन से संबंधित है। इसमें कर्णिकार (अमलतास) वृक्षों की सुंदरता का उल्लेख किया गया है, जिनकी पीली पुष्पावलियाँ सोने के आभूषणों जैसी प्रतीत होती हैं।

हिन्दी अनुवाद : चारों ओर इन खिले हुए कर्णिकार (अमलतास) वृक्षों को देखो, जो अपनी पीली पुष्पावलियों से पूरी प्रकृति को आभायुक्त बना रहे हैं। वे ऐसे प्रतीत हो रहे हैं जैसे कोई सुशोभित आभूषण हो, और उनकी लटकती हुई पुष्प-मालाएँ पीले वस्त्र धारण किए हुए मनुष्यों के समान दिख रही हैं।

यह श्लोक हमें प्रकृति की सुंदरता और उसके अनुपम सौंदर्य की ओर आकर्षित करता है। यह संदेश देता है कि प्रकृति का सौंदर्य दिव्यता और आध्यात्मिकता का प्रतीक होता है।

Quick Tip

कर्णिकार वृक्ष की पीली पुष्प-लताएँ सोने के आभूषणों जैसी प्रतीत होती हैं, जो प्राकृतिक सौंदर्य और समृद्धि का प्रतीक हैं।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में उत्तर दीजिए :

(i) संस्कृत-साहित्यस्य अनुशीलनेन के गुणाः सञ्जायन्ते ?

उत्तर : संस्कृत-साहित्यस्य अनुशीलनेन विवेकः, नैतिकता, ज्ञानं च सञ्जायन्ते । संस्कृतस्य अध्ययनं मनुष्याणां चिन्तनशक्तिं वर्धयति । तदनुशीलनेन शिष्टाचारः, धर्मबोधः, सांस्कृतिकगौरवं च लभ्यते । अपि च, तत् साहित्यं जीवनस्य आदर्शान् प्रदर्शयति, यत् जनानां सन्मार्गे प्रवर्तयति ।

Quick Tip

संस्कृत-साहित्यस्य अध्ययनं जीवनं नैतिकतया, ज्ञानवर्धनेन च समृद्धं करोति ।

(ii) बौद्ध युगे पञ्चशील सिद्धान्ताः कस्य हेतोः प्रयुक्ता आसन् ?

उत्तर : बौद्ध युगे पञ्चशील सिद्धान्ताः लोककल्याणस्य हेतोः प्रयुक्ताः आसन् । ते अहिंसा, सत्यं, अस्तेयम्, ब्रह्मचर्यं, अपरिग्रहश्च इति धर्मप्रवर्तनार्थं प्रचारिताः । बुद्धस्य मतानुसारं, ते सिद्धान्ताः मानवसमाजे शान्ति, सहअस्तित्वं च स्थापयितुं प्रयुक्ताः । अपि च, ते जगति विश्वबंधुत्वस्य आधारस्तम्भाः जाताः ।

Quick Tip

पञ्चशील सिद्धान्ताः अहिंसा, सत्यं, अस्तेयं, ब्रह्मचर्यं, अपरिग्रहश्च मानवसमाजस्य शान्तये प्रयुक्ताः आसन् ।

(iii) महामना मालवीयः वाराणसी - नगरे कस्य विश्वविद्यालयस्य संस्थापनम् करोत् ?

उत्तर : महामना पंडित मदनमोहन मालवीयः वाराणसी नगरे **काशी हिन्दू विश्वविद्यालयस्य** संस्थापनम् अकरोत् । सः भारतीय शिक्षायाः उन्नतिकरणाय एवं नवोन्मेषाय प्रयत्नशीलः आसीत् । तस्य कार्येण, भारतस्य विद्याभ्यासे महत्त्वपूर्णं योगदानं समुत्पन्नम् । अयम् विश्वविद्यालयः भारतस्य महत्त्वपूर्णं शिक्षणसंस्थानं वर्तते ।

Quick Tip

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः महामना मालवीयस्य विद्यानुरागस्य महत्त्वपूर्णं परिणामः अस्ति ।

(iv) दुर्योधनः कस्य प्रभावेण आसनात् चलितोऽभवत् ?

उत्तर : दुर्योधनः भीमसेनस्य प्रभावेण आसनात् चलितोऽभवत् । महाभारतयुद्धे गदायुद्धे दुर्योधनः भीमेन युद्धं कुर्वन् पराजितः अभवत् । भीमः तस्य उरुसंधिं प्रहारं कृत्वा तम् भूमौ पातयामास । एवं, सः भीमस्य पराक्रमेण पराजितः जातः ।

Quick Tip

भीमसेनस्य प्रहारात् दुर्योधनः महाभारते युद्धे पराजयम् अभवत् ।

10.(क) 'हास्य' रस अथवा 'शान्त' रस की परिभाषा लिखकर उसका उदाहरण दीजिए ।

उत्तर :

हास्य रस : हास्य रस का स्थायी भाव 'हास' होता है । यह रस किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थिति की अजीबो-गरीब प्रवृत्तियों को देखकर उत्पन्न होता है । हास्य रस में विनोद, व्यंग्य और उपहास के तत्व सम्मिलित होते हैं ।

उदाहरण :

"सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली ।"

(इस उदाहरण में व्यंग्यपूर्ण हास्य व्यक्त किया गया है ।)

शान्त रस : शान्त रस का स्थायी भाव 'शम' (शांति) होता है । यह रस वैराग्य, आध्यात्मिकता और सच्चे आत्मज्ञान के अनुभव से उत्पन्न होता है ।

उदाहरण :

"संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है, अतः मोह छोड़कर शांति की ओर बढ़ो ।"

Quick Tip

हास्य रस मनोरंजन हेतु होता है, जबकि शान्त रस वैराग्य और आत्मिक शांति को प्रकट करता है ।

10.(ख) 'रूपक' अलंकार अथवा 'उत्प्रेक्षा' अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए ।

उत्तर :

रूपक अलंकार : जब उपमेय और उपमान में भेद न दिखाकर दोनों को एक ही रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तब 'रूपक' अलंकार होता है । इसमें उपमेय का वास्तविक रूप उपमान के समान मान लिया जाता है ।

उदाहरण :

"चाँदनी की हँसी फैल रही है ।"

(इसमें चाँदनी को हँसी के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।)

उत्प्रेक्षा अलंकार : जब किसी वस्तु में किसी अन्य वस्तु की संभावना प्रकट की जाती है, किंतु उसके होने की पुष्टि नहीं की जाती, तब 'उत्प्रेक्षा' अलंकार होता है ।

उदाहरण :

"जलतरंग में मानो साक्षात् वीणावादन हो रहा हो ।"

(यहाँ जल की तरंगों की तुलना वीणावादन से की गई है, पर इसे पूर्ण रूप से नहीं माना गया ।)

Quick Tip

रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान को एक रूप में दिखाया जाता है, जबकि उत्प्रेक्षा अलंकार में संभावना प्रकट की जाती है।

10.(ग) 'चौपाई' छन्द अथवा 'बरवै' छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर :

चौपाई छन्द : चौपाई छन्द हिंदी साहित्य में अत्यंत प्रसिद्ध छन्द है, जिसका प्रयोग विशेष रूप से तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' में किया है। इस छन्द में प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं, तथा इसमें तुकबंदी का प्रयोग नहीं किया जाता।

उदाहरण :

"मनुज बिनय जब जाहि न आनी । बिनय संग तव भय उपजानी ॥"

(इसमें प्रत्येक पंक्ति में 16 मात्राएँ हैं, अतः यह चौपाई छन्द है।)

बरवै छन्द : बरवै छन्द 13 मात्राओं का छन्द होता है, जिसमें पहला चरण 8 मात्राओं का और दूसरा चरण 5 मात्राओं का होता है। इसमें भावनात्मक अभिव्यक्ति को प्रमुखता दी जाती है।

उदाहरण :

"बनवारी जी के संग, रही हरदम उमंग ।"

(इस छन्द में पहले चरण में 8 मात्राएँ और दूसरे चरण में 5 मात्राएँ हैं।)

Quick Tip

चौपाई छन्द तुलसीदास जी के ग्रंथों में प्रसिद्ध है, जबकि बरवै छन्द लोकगीतों में प्रयुक्त होता है।

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

(i) बढ़ती जनसंख्या और देश का भविष्य।

उत्तर :

प्रस्तावना : बढ़ती जनसंख्या विश्व के अनेक देशों के लिए चिंता का विषय बन चुकी है, और भारत इस समस्या से सर्वाधिक प्रभावित है। देश की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है, जिससे संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ रहा है। यदि समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं किया गया, तो यह देश की आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संरचना को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है।

बढ़ती जनसंख्या के कारण :

- चिकित्सा सुविधाओं में सुधार और मृत्यु दर में कमी : आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की प्रगति के कारण मृत्यु दर में गिरावट आई है, जिससे जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।
- अशिक्षा और पारिवारिक नियोजन की कमी : कई क्षेत्रों में लोग अभी भी परिवार नियोजन के महत्व को नहीं समझते, जिससे जन्मदर अधिक बनी रहती है।

- **सामाजिक और धार्मिक मान्यताएँ :** कुछ समुदायों में बड़े परिवार को संपन्नता और शक्ति का प्रतीक माना जाता है, जिससे जनसंख्या नियंत्रित नहीं हो पाती ।
- **कृषि प्रधान समाज और परंपरागत सोच :** ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक बच्चों को श्रमशक्ति के रूप में देखा जाता है, जिससे जनसंख्या वृद्धि को बढ़ावा मिलता है ।

बढ़ती जनसंख्या के प्रभाव :

- **बेरोजगारी और गरीबी में वृद्धि :** जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में रोजगार के अवसर नहीं बढ़ रहे, जिससे बेरोजगारी और गरीबी की समस्या गहराती जा रही है ।
- **प्राकृतिक संसाधनों की कमी :** जल, भोजन, भूमि, ऊर्जा और अन्य संसाधनों पर अधिक दबाव बढ़ रहा है, जिससे इनकी उपलब्धता कम होती जा रही है ।
- **पर्यावरणीय असंतुलन और प्रदूषण :** अधिक जनसंख्या के कारण वनों की कटाई, जल और वायु प्रदूषण जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ रहा है ।
- **शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रभाव :** बढ़ती जनसंख्या के कारण सरकारी शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर अत्यधिक भार पड़ रहा है, जिससे इनकी गुणवत्ता प्रभावित होती है ।

समाधान और उपाय :

- **परिवार नियोजन को प्रोत्साहित करना :** सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा जनसंख्या नियंत्रण से संबंधित योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू किया जाना चाहिए ।
- **जनसंख्या नियंत्रण हेतु सरकार द्वारा कठोर नीतियाँ :** चीन की भाँति भारत में भी दो-बच्चे की नीति को प्रभावी रूप से लागू करने पर विचार करना चाहिए ।
- **शिक्षा और जागरूकता अभियान चलाना :** लोगों को परिवार नियोजन, गर्भनिरोधक साधनों के उपयोग और छोटे परिवार के लाभों के बारे में जागरूक करना आवश्यक है ।
- **महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देना :** महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसरों में वृद्धि से जन्मदर को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी ।
- **शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में संतुलन :** शहरीकरण को नियंत्रित करने और ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की गति बढ़ाने से बढ़ती जनसंख्या के प्रभाव को कम किया जा सकता है ।

निष्कर्ष : यदि बढ़ती जनसंख्या पर शीघ्र नियंत्रण नहीं किया गया, तो यह देश के विकास में बाधा उत्पन्न करेगी । बढ़ती जनसंख्या के कारण बेरोजगारी, कुपोषण, शिक्षा की कमी और संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ बढ़ती जाएँगी । सरकार और नागरिकों को मिलकर इस समस्या का समाधान निकालना आवश्यक है । जनसंख्या नियंत्रण केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं होगा, बल्कि इसके लिए प्रत्येक नागरिक को अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा । यदि हम इस समस्या को गंभीरता से लेते हैं और आवश्यक कदम उठाते हैं, तो हम अपने देश के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना कर सकते हैं ।

Quick Tip

जनसंख्या नियंत्रण के बिना संसाधनों का संतुलित विकास संभव नहीं है । शिक्षा, परिवार नियोजन और जागरूकता ही इसका समाधान है ।

(ii) राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की भूमिका ।

उत्तर :

प्रस्तावना : शिक्षक समाज का निर्माता होता है । वह केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिकता, अनुशासन और मूल्यों की शिक्षा भी प्रदान करता है । किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, क्योंकि वे भविष्य की पीढ़ी को तैयार करते हैं ।

शिक्षक की भूमिका :

- **शिक्षा और नैतिक मूल्यों का संचार :** शिक्षक विद्यार्थियों को केवल विषय संबंधी ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिकता, अनुशासन और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा भी देते हैं ।
- **राष्ट्रप्रेम और समाज सेवा की भावना :** शिक्षक विद्यार्थियों में देशभक्ति और समाज सेवा की भावना जागृत करते हैं, जिससे वे एक जिम्मेदार नागरिक बनते हैं ।
- **वैज्ञानिक सोच और नवाचार को बढ़ावा :** एक शिक्षक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, जिससे विद्यार्थी नवीनता और नवाचार की ओर अग्रसर होते हैं ।
- **सामाजिक समानता का समर्थन :** शिक्षक जाति, धर्म, भाषा और लिंग के आधार पर भेदभाव से मुक्त समाज के निर्माण में सहायक होते हैं ।

शिक्षक के समक्ष चुनौतियाँ :

- शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता
- शिक्षकों के उचित प्रशिक्षण और संसाधनों की कमी
- विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों की गिरावट

समाधान और उपाय :

- शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण और आधुनिक शिक्षण तकनीकों से अवगत कराना
- शिक्षा प्रणाली में सुधार कर व्यावहारिक ज्ञान और नैतिक मूल्यों पर जोर देना
- विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों को आदर्श और अनुशासनप्रिय बनना

निष्कर्ष : राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है । शिक्षक ही भविष्य के नागरिकों को तैयार करते हैं और समाज में बदलाव लाने की शक्ति रखते हैं । यदि शिक्षक अपने कर्तव्यों का पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ निर्वहन करें, तो एक मजबूत और विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है ।

Quick Tip

शिक्षक राष्ट्र के वास्तविक निर्माता होते हैं । वे भविष्य की पीढ़ी को दिशा और प्रेरणा प्रदान करते हैं ।

(iii) भारत में आतंकवाद की समस्या ।

उत्तर :

प्रस्तावना : आतंकवाद आज भारत सहित समस्त विश्व के लिए एक गंभीर समस्या बन चुका है। यह न केवल निर्दोष लोगों के जीवन को संकट में डालता है, बल्कि देश की आंतरिक सुरक्षा, आर्थिक विकास और सामाजिक स्थिरता को भी प्रभावित करता है।

आतंकवाद के कारण :

- **धार्मिक कट्टरता और उग्रवाद :** विभिन्न धार्मिक संगठनों द्वारा कट्टरवाद को बढ़ावा देना आतंकवाद का प्रमुख कारण है।
- **राजनीतिक अस्थिरता और बाहरी हस्तक्षेप :** कई बार आतंकवाद को राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया जाता है।
- **आर्थिक असमानता और बेरोजगारी :** अशिक्षा और बेरोजगारी के कारण युवा आतंकवादी संगठनों में शामिल हो जाते हैं।

आतंकवाद के प्रभाव :

- निर्दोष लोगों की हानि और समाज में भय का वातावरण
- आर्थिक और बुनियादी ढांचे का विनाश
- देश की सुरक्षा और संप्रभुता के लिए खतरा

समाधान और उपाय :

- आतंकवाद विरोधी कठोर कानूनों का क्रियान्वयन
- सुरक्षा एजेंसियों को आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित करना
- युवाओं को सही दिशा में प्रेरित करने के लिए शिक्षा और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना

निष्कर्ष : आतंकवाद केवल एक कानून व्यवस्था की समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर गहरे प्रभाव डालता है। इसे समाप्त करने के लिए सरकार, सुरक्षा बलों और आम नागरिकों को मिलकर संगठित प्रयास करने होंगे।

Quick Tip

आतंकवाद को समाप्त करने के लिए सुरक्षा बलों, शिक्षा और सामाजिक समरसता आवश्यक हैं।

(iv) पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और समाधान।

उत्तर :

प्रस्तावना : पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है। यह मानव स्वास्थ्य, वनस्पतियों और जीव-जंतुओं के अस्तित्व के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। यदि समय रहते इस पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो इसका परिणाम भयावह हो सकता है।

प्रदूषण के प्रकार :

- **वायु प्रदूषण :** वाहनों और कारखानों से निकलने वाला धुआँ वायु को विषाक्त बनाता है।
- **जल प्रदूषण :** औद्योगिक कचरा और घरेलू अपशिष्ट जल स्रोतों को दूषित करते हैं।

- ध्वनि प्रदूषण : अधिक शोर और लाउडस्पीकर के कारण मानसिक और शारीरिक तनाव बढ़ता है ।
- मृदा प्रदूषण : प्लास्टिक और रसायनों के अत्यधिक उपयोग से भूमि की उर्वरता घटती है ।

समाधान और उपाय :

- वनीकरण को बढ़ावा देना और वृक्षारोपण अभियान चलाना
- प्लास्टिक के उपयोग को कम करना और पुनः चक्रीकरण को बढ़ावा देना
- सार्वजनिक परिवहन को प्रोत्साहित करना और वाहनों के प्रदूषण स्तर को नियंत्रित करना

निष्कर्ष : पर्यावरण संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी है । यदि हम समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं करेंगे, तो यह संपूर्ण मानवता के लिए घातक सिद्ध हो सकता है ।

Quick Tip

स्वच्छ पर्यावरण के लिए जागरूकता और ठोस प्रयास आवश्यक हैं ।

12.(क)(i) 'पवनः' का सन्धि-विच्छेद होगा :

- (अ) प + अनः
- (ब) पो + अनः
- (स) पव + नः
- (द) पौ + अनः

Correct Answer : (स) पव + नः

उत्तर : 'पवनः' का सन्धि-विच्छेद पव + नः होता है । इसमें 'पव' मूल शब्द है और 'नः' प्रत्यय जुड़कर 'पवनः' शब्द का निर्माण करता है । यह शब्द संस्कृत व्याकरण में सामान्य रूप से वायु या हवा के लिए प्रयुक्त होता है ।

Quick Tip

सन्धि-विच्छेद करते समय शब्द के मूल रूप और प्रत्यय को सही ढंग से पहचानना आवश्यक होता है ।

(ii) 'उच्चारणम्' का सन्धि-विच्छेद होगा :

- (अ) उत् + चरणम्
- (ब) उ + चरणम्
- (स) उत् + चरणम्
- (द) उत् + चारणम्

Correct Answer : (स) उत् + चरणम्

उत्तर : 'उच्चारणम्' का सन्धि-विच्छेद उत् + चरणम् होता है । इसमें 'उत्' उपसर्ग और 'चरणम्' मूल शब्द है । इस संधि में 'त्' का परसवर्ण परिवर्तन होकर 'च्च' रूप में परिणत हुआ है । यह शब्द उच्चारण, यानी स्पष्ट शब्दों में बोलने की प्रक्रिया को दर्शाता है ।

Quick Tip

संस्कृत में संधि बनने पर वर्णों के उच्चारण में परिवर्तन हो सकता है, जिसे ध्यानपूर्वक पहचानना आवश्यक होता है ।